P: ISSN No. 2231-0045 RNI No. UPBIL/2012/55438 VOL.-III, ISSUE-I, August-2014
E: ISSN No. 2349-9435
Periodic Research

वर्तमान समय में युवा लड़कियों का फैशन के प्रति बढ़ता रुचि व रुझान (बरेली शहर पर आधारित)

पूनम सक्सेना
असिस्टेन्ट प्रोफेसर
समाजशास्त्र विभाग
वी0 आर0 ए0 एल0 राजकीय महिला महाविद्यालय
बरेली

सारांश

आज के औद्योगिक एवं भूमण्डलीकरण के युग में फैशन ने सामाजिक जीवन के हर क्षेत्र में परिवर्तन किया है। परम्परागत परिवर्तन के स्थान पर आधुनिक फैशन ने स्थान बना लिया है। फैशन समय केंद्रित होता है। नए के प्रति आकर्षण फैशन का भविष्य तय करता है, यह मनुष्य की रचनात्मक क्षमता को विकसित करता है। युवा पीढ़ी तो फैशन की दीवानी रहती है। वर्तमान समय में युवा लड़कियों के फैशन के प्रति सोच में बहुत परिवर्तन आया है तथा उनकी रुचि फैशन के प्रति बढ़ती जा रही है। उनका मानना है कि उनके व्यक्तित्व के विकास में फैशन बहुत सहायक है, आत्मनिर्भर बनाने उनके स्वालम्बी होने में फैशन का बहुत बड़ा योगदान है। युवा लड़कियों का मानना है कि वह फैशन को परिवर्तन के लिए, आकर्षक दिखने के लिए, अहं की संतुष्टि के लिए साथ ही साथ विशिष्ट लगने की इच्छा के लिए अपनाती है। अधिकांशतः लड़कियों के परिवार भी फैशन को सकारात्मक दृष्टि से देखते हैं। फैशन अपनाने से युवा लड़कियों के जीवन में बहुत बदलाव हुए हैं; जैसे आत्मविश्वास में वृद्धि, व्यक्तित्व का विकास, सोच में परिवर्तन आदि। युवा लड़कियों ने फैशन को सही अर्थों में समझा व स्वीकारा है, उसे अपनाने से उनके व्यक्तित्व विशेषकर मान–सम्मान में वृद्धि हुई है तथा समाज में अपनी नयी पहचानबना सकने में सफल साबित हुई हैं।

मुख्य शब्दः सान्निध्य, लालित्य, सौम्य, सतोगुणी, संवृत्ति, अनुरूपता, उन्मुकता, वांछनियता, स्वालम्बी, अनुकरण।

प्रस्तावना

आज का युग फैशन का युग है। फैश्न से हर व्यक्ति प्रभावित होता है। फैशन को एक प्रकार का परिवर्तन माना जा सकता है क्योंकि इसके कारण मनुष्य के कार्यों, व्यवहारों तथा रुचियों में परिवर्तन होता है। इन परिवर्तनों का क्रम जारी रहता है। जो बातें आज अपनायी जाती हैं उन्हें आगे चलकर छोड़ भी दिया जाता है।

सौन्दर्य का अवलोकन प्रदर्शन और सान्निध्य की इच्छा स्वाभाविक है और उचित भी। यह कलात्मक अभिरुचि मनुष्य के लालित्य का परिचय देती है, पर यह होनी चाहिए सौम्य, सतोगुणी, तभी उसकी उत्कृष्टता है और सराहना भी, पर यदि यह विकृत होने लगे तो अमृत से विष भी बन सकती है।

व्यक्तित्व को निखारने और आकर्षक बनाने वाला सद्गुण–शालीनता, न हो तो सब व्यर्थ हैं व्यक्तित्व निखार के लिए शारीरिक शालीनता उसमें निखार लाती है – नारी का तो यह सच्चा आभूषण है, जिसका प्रभाव परिवार, व्यक्ति और समाज पर पड़े विना नहीं रह सकता।

एस0आर0 स्टीनमेट्ज ने कहा है कि ''फैशन शुद्धता तथ्य परक होता है उसमें सामाजिक परिवर्तन और नियंत्रण के कारण परिवर्तन आते रहते हैं।''[1]इसका प्रधान कारण है परम्परागत रूप का अप्रासंगिक हो जाना। परिणामतः फैशन के नए रूप को आत्मसात करना पड़ता है। फैशन समय केन्द्रित होता है। सामाजिक गतिशीलता से इसका गहरा संबंध है। फैशन कभी भी लक्ष्यहीन और निर्विरोध पूर्ण परिवर्तनों के साथ समाप्त नहीं होता। फैशन में दिखावे और प्रदर्शन के तत्व निहित रहते हैं। फैशन को संवृत्ति बनाने वाले तत्व हमेशा वर्तमान में रहते हैं। नए के प्रति आकर्षण फैशन का भविष्य तय करता है। फैशन का दायरा एटीट्यूड, पेशे विचारों और व्यक्ति के हितों तक फैला हुआ है। इसमें मनुष्य की रचनात्मक समृद्धि का पुनर्निर्माण होता रहता है जो मनुष्य की रचनात्मक क्षमता को उभारता है।

आज का युग फैशन का युग है। फैशन से हर व्यक्ति प्रभावित होता है। फैशन को एक प्रकार का परिवर्तन माना जा सकता है क्योंकि इसके कारण लोगों के कार्यों, व्यवहारों तथा रुचियों में परिवर्तन उत्पन्न होता है। इन

परिवर्तनों का क्रम जारी रहता है। फैशन परिवर्तनशील है परन्तु इसमें स्थायित्व थोड़ा बहुत पाया जाता है। फैशन का आशय व्यक्तियों के व्यवहार, वस्त्र, शैली या अन्य चीजों के प्रचलन में होने वाले परिवर्तन से है। फैशन सम्बन्धी परिवर्तन उपयोगी भी हो सकते हैं लेकन यह आवश्यक नहीं है कि इनकी उत्पत्ति उपयोगिता के आधार पर होती है। फैशन की उत्पत्ति तथा उसका अनुकरण नवीनता, आकर्षण, अनुरूपता और अपने आपको अलग करने की भावना के कारण होता है। युवा पीढ़ी तो फैशन की दीवानी रहती है। कुछ क्षेत्रों में फैशन तेजी से बदलता है तो कुछ क्षेत्रों में इसकी गति धीमी भी रहती है। परिवर्तन फैशन की विशिष्टता है। प्रस्तुत अध्ययन वर्तमान समय में युवा लड़कियों का फैशन के प्रति रुचि का रूझान से सम्बन्धित है एवं इसमें बरेली शहर की फैशन कोर्स चलानेवाली चार संस्थाओं की युवा लड़कियों का अध्ययन किया गया है।

बरेली का संक्षिप्त इतिहास एवं विवरण

बरेली रुहेलखण्ड मण्डल का एक केन्द्र है। पांचाल प्रदेश के नाम से प्रसिद्ध बरेली जनपद अपनी सांस्कृतिक विरासत और सोहार्द के प्रतीक के रूप में जाना जाता है। जहाँतक इसकी सीमाओं का सम्बन्ध है तो इसके पूर्व में पीलीभीत, पश्चिम में रामपुर, दक्षिण–पश्चिम में बदायूँ, दक्षिण–पूर्व में शाहजहाँपुर और उत्तर में नैनीताल है।

महाभारत काल में यह पांचाल देश का हिस्सा था। पांचाल देश को बाद में गंगा नदी के आर–पार जब दो भागों में विभाजित किया या तब यह क्षेत्र उत्तरी पांचाल का हिस्सा बना। उस समय वर्तमान बरेली जिस स्थान पर है वही उत्तरी पांचाल की राजधानी छात्रावती थी। छात्रावती को बाद में अहिच्छत्र भी कहा गया। बाद में मुगलकालीन सभ्यता और अनेकानेक सभ्यताओं के मध्य अपने आपको स्थिर रखते हुए यह रुहेल राजपूतों के शासन के कारण रुहेलखण्ड नाम से जाना जाने लगा। बरेली रुहेलखण्ड का प्रमुख नगर और मुख्यालय बना।

बरेली को बाँस बरेली के नाम से भी जाना जाता है। बरेली जनपद का अस्तित्व 16वीं शताब्दी से हुआ। माना जाता है कि इसकी स्थापना बरल देव और बाँस देव ने की। यह दोनों जगत सिंह कटेहरिया के पुत्र थे, जिन्होंने बरेली की स्थापना 1537 में की।[2] कुछ भी हो पांचाल नाम से प्रसिद्ध कालान्तर में रुहेलखण्ड का मुख्यालय और वर्तमान में मण्डल मुख्यालय होने के कारण बरेली अपने आप में एक विशाल महानगर की श्रेणी में आता है अपने अन्दर ऐतिहासिक, धार्मिक और सृजनशीलता की सम्भावनायें समेटे हैं।

अध्ययन का उद्देश्य

1. अध्ययन का उद्देश्य युवा लड़कियों का फैशन अपनाने के कारण को ज्ञात करना।
2. युवा लड़कियों के परिवार का फैशन के प्रति दृष्टिकोण को ज्ञात करना।
3. युवा लड़कियों का फैशन के प्रति दृष्टिकोण को ज्ञात करना।
4. फैशन का युवा लड़कियों के जीवन पर पड़ने वाले प्रभाव को ज्ञात करना।
5. फैशन को अपनाने के लिए सूचना एवं तकनीकि के साधन को ज्ञात करना।
6. युवा लड़कियों की फैशन से सम्बन्धित समस्याओं को ज्ञात करना।

कार्यवाहक उपकल्पनाएँ

1. युवा लड़कियाँ अपने अहं की सन्तुष्टि के लिए फैशन को अपनाती हैं।
2. युवा लड़कियों पर फैशन का प्रभाव सकारात्मक पड़ता है।
3. युवा लड़कियों के परिवार वाले फैशन के प्रति सकारात्मक दृष्टिकोण रखते हैं।
4. युवा लड़कियों के व्यक्तित्व को विकसित करने में फैशन सहायक है।

अध्ययन पद्धति एवं प्रविधि

किसी भी अध्ययन में तथ्यों को प्राप्त करने के लिए, जिससे कि उक्त उद्देश्यों की पूर्ति हो सके, वैज्ञानिक पद्धतियों का अनुसरण आवश्यक होता है अतः प्रस्तुत अध्ययन में निम्न प्रविधियों का प्रयोग किया गया है।

साक्षात्कार अनुसूची : प्रस्तुत अध्ययनमें तथ्यों को संकलित करने के लिए साक्षात्कार अनुसूची का प्रयोग किया गया है। वस्तुतः साक्षात्कार अनुसूची में अध्ययन के उद्देश्य के अनुसार क्रमानुसार प्रश्नों को रखा गया है। अधिकांशतया प्रश्न प्रतिबन्धित स्वरूप के हैं व उत्तरदाताओं को अपने प्रश्नका उत्तर सकारात्मक एवं नकारात्मक दोनों ढंग में देने की स्वतंत्रता थी।

अवलोकन

प्रत्येक अध्ययन में अवलोकन एक महत्वूपर्ण स्थान रखता है। गुड एवं हाट ने स्पष्ट किया है ''विज्ञान अवलोकन से प्रारम्भ होता है तथा उसे सत्यापन के लिए अन्ततः आवश्यक रूप से अवलोकन पर ही पुनः लौट आना पड़ता है।''[3]

कुछ बातें ऐसी होती हैं, जिन्हें देखकर ही उनके बारे में वास्तविकता का पता लगाया जाता है। वैज्ञानिक विश्वसनीयता सही प्रत्यक्षीकरण पर आधारित होती है। अतः आवश्यकतानुसार अवलोकन प्रविधि के द्वारा भी तथ्यों को संकलित किया गया है।

निदर्शन पद्धति

किसी भी वैज्ञानिक अध्ययनमें निदर्शन वह प्रविधि है जिसकी सहायता से अध्ययन क्षेत्र की समस्त इकाइयों का अध्ययन न करके कुछ प्रतिनिधित्वपूर्ण इकाइयों को निर्दशन के आधार पर चुनकर विस्तृत एवं उद्देश्यपूर्ण अध्ययन कर लिया जाता है जिससे श्रम, समय एवं धन की बचत होती है साथ ही साथ परिणाम भी तथ्यात्मक एवं शुद्ध होते हैं। बोगार्डस के शब्दों में ''निर्दशन एक पूर्व निर्धारित योजना के अनुसार इकाइयों केएक समूह में निश्चित प्रतिशत का चयन है।''[4] बरेली शहर में युवा लड़कियों की संख्या अधिक है इसलिए समय को दृष्टिगत रखते हुए शहर के चार फैशन कोर्स संचालित करने वाली संस्थाओं की 100 युवा लड़कियों को अध्ययन के लिए उद्देश्यपूर्ण निदर्शन के माध्यम से चुना गया।

सांख्यिकीय पद्धति व तथ्यों का प्रक्रियाकरण

P: ISSN No. 2231-0045 RNI No. UPBIL/2012/55438 VOL.-III, ISSUE-I, August-2014
E: ISSN No. 2349-9435
Periodic Research

ज्ञान के संग्रह का अपना एक महत्व होता है। ज्ञान के आंकड़ों को परिणित करने के साथ–साथ प्रतिशत पर निकाल कर प्राप्त ज्ञान का सही और संक्षिप्त रूप सामने आता है, जिसके परिणामस्वरूप निष्कर्ष निकालने में अत्यन्त सुविधा होती है। प्रस्तुत अध्ययन में सांख्यिकीय विधि का प्रयोग किया गया है। तथ्यों का संकलन, वर्गीकरण, तालिकाकरण और विश्लेषण सांख्यिकीय विधि के द्वारा किया गया। प्रस्तुत अध्ययन में संकलित तथ्यों के प्रक्रियाकरण करने के लिए अनेक कार्य प्रणालियों का प्रयोग किया गया है – जैसे तथ्य सम्पादन, विश्लेषण एवं व्याख्या आदि।

अध्ययन का प्रारूप

प्रस्तुत अध्ययन का प्रारूप अन्वेषणात्मक प्रकृति का है। अन्वेषणात्मक शोध में किसी सामाजिक घटना के पीछे छिपे कारणों को जानने का प्रयास किया जाता है जिससे कि किसी समस्या के सैद्धान्तिक और व्यवहारिक पक्ष के सम्बन्ध में ज्ञान प्राप्त किया जा सके। प्रस्तुत अध्ययन में बरेली शहर की युवा लड़कियों का फैशन के प्रति रुचि रूझान व दृष्टिकोण जानने का प्रयास किया गया है उनके व्यक्तित्व के विकास में फैशन का क्या योगदान है आदि तथ्यों को विश्लेषित करने का प्रयास किया गया है। आशा है कि अन्वेषणात्मक स्तर का यह अध्ययन भविष्य में होने वाले अध्ययनों को उत्प्रेरित कर ज्ञान की नवीन दिशाओं को प्रशस्त करेगा।

यह अध्ययन सर्वेक्षण पर आधारित है जिसमें शहर के चार फैशन कोर्स संचालित करने वाली संस्थाओं की 100 युवा लड़कियों का अध्ययन निदर्शन पद्धति के आधार पर किया गया है।

निष्कर्ष एवं विश्लेषण

साक्षात्कार अनुसूची के द्वारा अध्ययन से सम्बन्धित तथ्यों को एकत्रित कर उनको वर्गीकृत एवं विश्लेषित किया गया है।

उत्तरदाता का फैशन अपनाने का कारण

फैशन को अपनाने के बहुत कारण हो सकते हैं। व्यक्ति स्वभावतः परिवर्तन एवं नवीनता पसन्द करता है। इच्छापूर्ति के लिए नवीन वस्तुओं को अपने व्यवहार में लाना चाहता है इससे उसे नवीनता की अनुभूति होती है।[5]

फैशन को अपनाने के पीछे एक कारण यह भी है कि लोग अपनी आकर्षकता में वृद्धि करना चाहते हैं। फैशन का सम्बन्ध व्यक्ति के स्व से भी होता है, नवीन वस्त्रों को धारण कर वह अपने सम्मान में वृद्धि करना चाहता है लोगों की दृष्टि में उसका महत्व बढ़े व अन्य लोगों से स्वयं को अलग दिखाने की प्रवृत्ति के कारण भी वह नवीन वस्तुओं या डिजाइनों को अपनाना प्रारम्भ कर देता है।

सारिणी संख्या–01
उत्तरदाताओं का फैशन अपनाने के कारण

क्रम संख्या	फैशन अपनाने के कारण	उत्तरदाताओं की संख्या	कुल योग प्रतिशत
01.	परिवर्तन के लिए	15	15:
02.	आकर्षण के लिए	27	27:
03.	अहं की संतुष्टि के लिए	32	32:
04.	विशिष्ट दिखने की इच्छा केलिए	26	26:
	कुल योग	**100**	**100:**

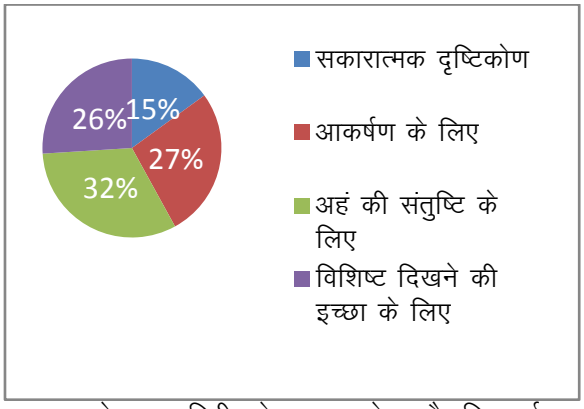

उपरोक्त सारिणी से स्पष्ट होता है कि वर्तमान समय की युवा लड़कियाँ अपने अहं को बनाये रखना चाहती हैं वह समाज में अपना एक स्थान बनाना चाहती है इसीलिए 32: उत्तरदाता अहं की संतुष्टि के लिए, 15: उत्तरदाता परिवर्तन के लिए, 27: आकर्षण के लिए व 26: विशिष्ट लगने की इच्छा के लिए फैशन अपनाती हैं।

उत्तरदाता के परिवार का फैशन के प्रति दृष्टिकोण

फैशन एक अस्थाई प्रचलन या समाज द्वारा अस्वीकृत आदत है जिसमें विचलन एवं परिवर्तन होते रहते हैं, वर्तमान समय में बहुत से परिवारों में आज भी परिवर्तन को पसन्द नहीं किया जाता है। परिवारों का मानना है कि फैशन को अपनाना एक गलत आदत है, नवीन फैशनको अपनाने से लड़कियों में उन्मुकता, खुलापन आ रहा है तथा सहनशीलता में कमी आ रही है, आगे बढ़ने की ललक में वह किसी भी तरह के फैशन को अपना रही है जिससे भारतीय संस्कृति का ह्रास हो रहा है। लेकिन कुछ परिवारों को मानना है कि फैशन के कारण समाज में नए परिवर्तन हो रहे हैं लोगों की सोच में बदलाव आ रहा है लोग जागरूक हो रहे हैं। उनका मानना है नवीन फैशन को अपनाने में युवा लड़कियों में आत्मविश्वास बढ़ रहा है, निर्णय लेने की कि क्षमता विकसित हो रही है तथा व्यक्तित्व के विकास के साथ–साथ वह पुरूषों के साथ कंधे से कंधा मिलाकर आगे बढ़ रही है।

सारिणी संख्या–02
उत्तरदाताओं के परिवार का फैशन के प्रति दृष्टिकोण

क्रम संख्या	उत्तरदाताओं के परिवार का फैशन के प्रति दृष्टिकोण	उत्तरदाताओं की संख्या	कुल योग प्रतिशत
01.	सकारात्मक दृष्टिकोण	67	67:
02.	नकारात्मक दृष्टिकोण	33	33:
	कुल योग	**100**	**100:**

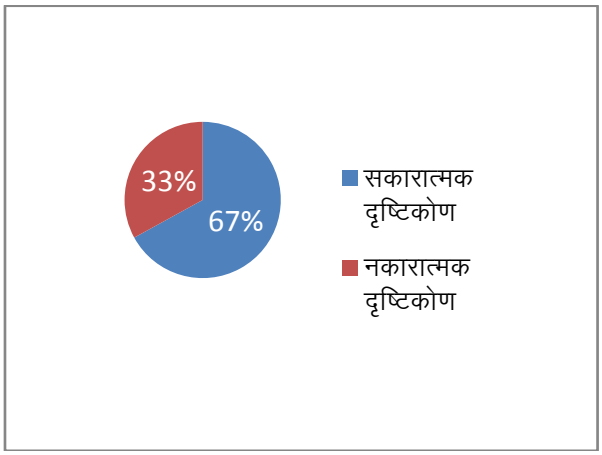

परिवर्तन प्रकृति का शाश्वत नियम है और परिवर्तन का प्रभाव युवा लड़कियों के परिवारों पर भी पड़ रहा है। उनकी सोच में, उनके व्यवहार में परिवर्तन आता जा रहा है। उपरोक्त सारिणी से यह स्पष्ट होता है कि 67: उत्तरदाता के परिवार वाले फैशन को सकारात्मक दृष्टिकोण से देखते हैं अर्थात उनका मानना है कि फैशन व्यक्तित्व को विकसित करने में महत्वपूर्ण भूमिका अदा करता है। युवा लड़कियाँ फैशनको अपना कर अपना चहुँमुखी विकास कर रही हैं। 33: उत्तरदाताओं के परिवार वाले इसको नकारात्मक दृष्टिकोण से देखते हैं। उनका मानना है कि फैशन का प्रभाव युवा लड़कियों पर ही नहीं युवा लड़कों पर भी स्वस्थ नहीं पड़ता है। फैशन के कारण समाज विघटन के दौर से गुजर रहा है।

उत्तरदाताओं का फैशन के प्रति दृष्टिकोण

व्यक्ति अन्य लोगों के समान लगने के लिए नवीन फैशन को उपयोग में लेना प्रारम्भ कर देता है। फैशन को अपनाने के पीछे एक कारण यह भी है कि लोग अपनी आकर्षकता में वृद्धि करना चाहते हैं ऐसी स्थिति में उनके लिए सामाजिक वांछनियता का महत्व नहीं रह जाता है।

कुछ लोग अपनी शारीरिक कमियों को छिपाने के प्रयास में भी नवीन पोशाक, वस्तुओं या शैलियों का उपयोग करने लगते हैं। वह यह समझते हैं कि नवीनता को अपना कर वह अपनी सामाजिक स्थिति को और भी अधिक प्रभावी बना सकते हैं।

सारिणी संख्या–03
उत्तरदाताओं का फैशन के प्रति दृष्टिकोण

क्रम संख्या	उत्तरदाताओं का फैशन के प्रति दृष्टिकोण	उत्तरदाताओं की संख्या	कुल योग प्रतिशत
01.	सकारात्मक दृष्टिकोण	75	75:
02.	नकारात्मक दृष्टिकोण	25	25:
	कुल योग	**100**	**100:**

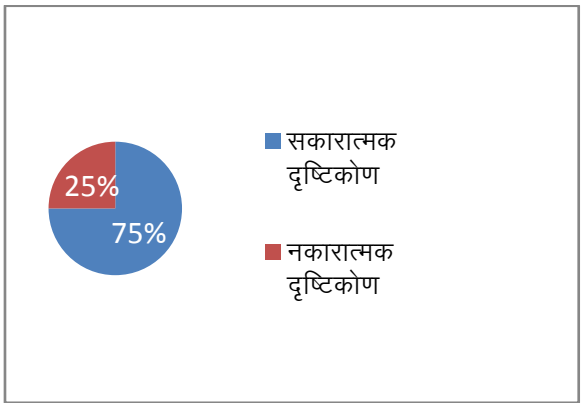

परिवर्तन का प्रभाव युवा लड़कियों पर भी दृष्टिगत होता है। नवीनता को पाने की चाह दूसरों के समकक्ष बनने की चाह का प्रभाव उनके व्यक्तित्व पर साफ दृष्टिगत होता है। 75: उत्तरदाता फैशन के प्रति सकारात्मक दृष्टिकोण रखती है अर्थात वह मानती है कि फैशन का उनके व्यक्तित्व को विकसित करने में बहुत बड़ा योगदान है। फैशन को अपनाने से समाज में उनको सम्मानित स्थान मिलता है, उनके सहयोगी, मित्र, इत्यादि पर उनका अच्छा प्रभाव पड़ता है। 25: उत्तरदाता फैशन के प्रति नकारात्मक दृष्टिकोण रखती हैं। उनका मानना है कि फैशन न केवल व्यक्तित्व को विघटित करता है वल्कि परिवार व समाज पर भी इसका नकारात्मक प्रभाव देखा जाता है।

फैशन का उत्तरदाताओं के जीवन पर प्रभाव

वर्तमान समय के फैशन का युवा लड़कियों के जीवन पर बहुत असर पड़ा है। युवतियों का यह मानना है कि प्रत्येक काम में सर्वप्रथम फैशन को सराहा जाता है। फैशन को अपने दिनचर्या में होने वाले सभी कार्यों से जोड़ते हैं, चाहे कपड़े पहनना हो, बोलना हो, नवीन शैली को अपनाना हो।

सारिणी संख्या–04
फैशन का उत्तरदाताओं के जीवन पर प्रभाव

क्रम संख्या	फैशन का उत्तरदाताओं के जीवन पर प्रभाव	उत्तरदाताओं की संख्या	कुल योग प्रतिशत
01.	व्यक्तित्व विकास में सहायक	55	55%
02.	मानसिक विकास में सहायक	45	45%
	कुल योग	**100**	**100%**

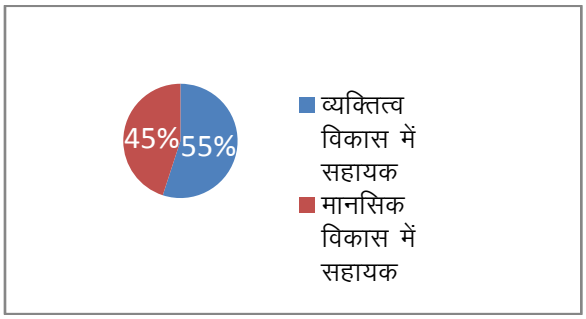

युवा लड़कियों के रहन सहन के स्तर, सोच, आत्मविश्वास इत्यादि को बढ़ाने में फैशन की महत्वपूर्ण भूमिका रहती है। उत्तरदाताओं का मानना है कि फैशन को अपनाने से उनका न केवल व्यक्तित्व विकसित होता वल्कि साथ ही साथ उनका मानसिक स्तर भी बढ़ता है। उपरोक्त सारिणी से स्पष्ट होता है कि फैशन 55: उत्तरदाताओं के व्यक्तित्व विकास में सहायक है, उनका मानना है कि फैशन को अपनाने से उनका आत्मविश्वास बढ़ जाता है। 45: उत्तरदाताओं के मानसिक विकास में फैशन सहायक कारक है।

उत्तरदाताओं का फैशन को अपनाने के लिए सूचना एवं तकनीकि के साधनों के प्रयोग को जानने का प्रयास करना

आधुनिक युग में सूचना एवं तकनीकि के साधन अधिक महत्वपूर्ण एवं अधिक लोकप्रिय हैं व्यक्तित्व, मानसिक विकास, मन बहलाने तथा विकास की ओर अग्रसर होने में ये साधन बहुत ही महत्वपूर्ण हैं। इनके सहारे नयी सूचनाएँ एवं नए तरीकों को सीखा जाता है, इनसे फैशन से सम्बन्धित नवीन जानकारियाँ आसानी से प्राप्त हो जाती हैं। उत्तरदाताओं से यह ज्ञात करने का प्रयास किया गया कि सूचना एवं तकनीकि के किस साधन को वह अपना रही हैं।

सारिणी संख्या–05
उत्तरदाताओं के सूचना एवं तकनीकि के साधन

क्रम संख्या	सूचना एवं तकनीकि के साधन	उत्तरदाताओं की संख्या	कुल योग प्रतिशत
01.	कम्प्यूटर	56	56:
02.	टेलीविजन	34	34:
03.	मासिक पत्रिका	10	10:
	कुल योग	**100**	**100:**

उत्तरदाताओं का मानना है कि सूचना एवं तकनीकि साधनों के माध्यम से फैशन से सम्बन्धित नवीनतम जानकारियाँ आसानी से प्राप्त हो जाती हैं। वे विभिन्न तकनीकि साधनों के द्वारा अपने व्यक्तित्व को विकसित करती हैं। उक्त तालिका से स्पष्ट होता है कि 56: उत्तदाता कम्प्यूटर का प्रयोग करके, 34: टेलीविजन के द्वारा एवं 10: मासिक पत्रिका के द्वारा फैशन से सम्बन्धित नवीनतम जानकारियाँ प्राप्त करती हैं।

सूचना एवं तकनीकि साधनों को जानने के साथ–साथ उत्तरदाताओं से यह भी जानने का प्रयास किया गया कि फैशन से सम्बन्धित विज्ञापन में उनकी रुचि कैसी है।

वर्तमान समय विज्ञापन का समय है। विज्ञापनों के माध्यम से ही हमें नवीन फैशन की जानकारी मिलती है। सामान्यतः अधिकतर लड़कियों में फैशन से सम्बन्धित विज्ञापनों के प्रति विशेष रुचि पायी जाती है जैसे आज जो चीज, शैली या डिजाइन चलन में है वे तुरन्त उसे अपनाना पसन्द करती हैं। पहनावे से सम्बन्धित खान–पान से सम्बन्धित, मेकअप से सम्बन्धित या कोई भी नवीन शैली से सम्बन्धित उत्पाद का विज्ञापन किसी भी समाचारपत्र या पत्रिका या टी0वी0 में निकले, सभी इसे खरीदना चाहते हैं चाहे वह उनके लिए उपयुक्त हो या नहीं। व्यक्ति नवीन वस्तुओं या डिजाइनों को इसलिए भी अपनाना प्रारम्भ कर देता है क्योंकि वह अन्य लोगों से स्वयं को भिन्न रूप में प्रस्तुत करना चाहता है। इसके पीछे सम्मान में वृद्धि की भावना भी छिपी रहती है। अन्य व्यक्तियों जैसा लगने के लिए भी व्यक्ति नवीन फैशन को ग्रहण करता है यदि वह ऐसा नहीं करता है तो वह अलग–थलग पड़ सकता है। अतः फैशन में अनुकरण का भी योगदान होता है।

85: उत्तरदाता विज्ञापनों के प्रति रुचि रखती हैं क्योंकि उनका मानना है कि विज्ञापनों के माध्यम से ही वह नवीन शैली को अपनाती हैं। कवल 15: उत्तरदाता विज्ञापन में रुचि नहीं रखती है।

उत्तरदाताओं की फैशन से सम्बन्धित समस्याएँ

वर्तमान समय में हर व्यक्ति फैशन से प्रभावित है चाहे युवा पीढ़ी हो या बच्चे।

उत्तरदाताओं का मानना है कि समाज में अपना स्थान बनाने – अपने व्यक्तित्व को विकसित करने के लिए वह फैशन को अपनाती है लेकिन कभी–कभी उन्हें विपरीत परिस्थितियों का सामना करना पड़ता है। छेड़छाड़ का सामना करना पड़ता है, रूढ़िवादी समाज उन्हें अच्छी दृष्टि से नहीं देखता। फैशन में तीव्रता से परिवर्तन के कारण उनकी आर्थिक स्थिति भी प्रभावित होती है। जिसके कारणवश वह नवीनता को ग्रहण करने में संकोच करती है।

उत्तरदाताओं का सुझाव है कि यदि फैशन को स्वस्थ रूप में अपनाया जाए तभी यह व्यक्तित्व का सही मायने में विकास करने में सहायक है। यदि विज्ञापनों के माध्यम से फैशन को अपनाते हैं तो यह ध्यान देना होगा कि जो फैशन हमारे लिए सही है उसी को अपनाये, फैशन को अपनाने की अंधी दौड़ में भागने से व्यक्तित्व ही विघटित होता है व समाज पर स्वस्थ प्रभाव नहीं पड़ता। वर्तमान समय में फैशन को अपनाने के लिए सूचना एवं तकनीकि के साधनों का भी सही प्रकार से प्रयोग करना

आवश्यक है अन्यथा इसका विपरीत प्रभाव पड़ता है। भारतीय संस्कृति के अनुसार ही फैशन को अपनाना चाहिए।

निष्कर्ष

प्रस्तुत अध्ययन **''वर्तमान समय में युवा लड़कियों का फैशन के प्रति बढ़ता रूचि व रूझान''** से सम्बन्धित है जो कुछ विशेष पहलुओं के विश्लेषण के उद्देश्य से प्रस्तुत किया गया है।

आज के औद्योगिक युग में फैशन ने सामाजिक जीवन के हर क्षेत्र में परिवर्तन किया है। परम्परागत परिवर्तन के स्थान पर आधुनिक फैशन ने स्थान ले लिया है, अधिकारों के क्षेत्र में तीव्रता से वृद्धि हो रही है। युवा लड़कियों का फैशन के प्रति सोच में बहुत परिवर्तन आया तथा उनका फैशन में विशेष रूझान पाया जाता है, उनका मानना है कि व्यक्तित्व के विकास में फैशन बहुत सहायक है।

उत्तरदाताओं का फैशन को अपनाने का कारण का विश्लेषण किया तो ज्ञात होता है कि 15 प्रतिशत परिवर्तन के लिए, 27 प्रतिशत उत्तरदाता आकर्षण के लिए, 32 प्रतिशत अहं की संतुष्टि के लिए तथा 26 प्रतिशत विशिष्ट दिखने की इच्छा के लिए फैशन को अपनाती है।

फैशन का प्रभाव उत्तरदाताओं के परिवार पर भी देखा गया है। 67 प्रतिशत उत्तरदाताओं के परिवार फैशन के प्रति सकारात्मक दृष्टिकोण रखते हैं यानि उनका मानना है कि व्यक्तित्व को विकसित करने में और वर्तमान समय में प्रगति के लिए फैशन को अपनाना बहुत आवश्यक है। 33 प्रतिशत परिवार फैशन के प्रति नकारात्मक दृष्टिकोण रखते हैं।

उत्तरदाताओं का फैशन के प्रति दृष्टिकोण जानने पर ज्ञात हुआ कि 75 प्रतिशत युवा लड़कियाँ फैशन के लिए सकारात्मक दृष्टिकोण रखती हैं, उनका मानना है कि फैशन को अपनाने से समाज में उनको सम्मानीय दृष्टि से देखा जाता है – एवं मित्रों एवं सहयोगियों पर उनका एक विशेष प्रभाव पड़ता है। केवल 25 प्रतिशत उत्तरदाता फैशन के प्रति नकारात्मक दृष्टिकोण रखती हैं, वे फैशन को व्यक्तित्व विघटित करने में सहायक मानती है।

उत्तरदाताओं के जीवन पर फैशन का क्या प्रभाव पड़ता है यह जानने पर ज्ञात हुआ कि 55 प्रतिशत उत्तरदाताओं के व्यक्तित्व को विकसित करने में फैशन सहायक है व 45 प्रतिशत उत्तरदाताओं के मानसिक विकास में फैशन सहायक कारक है।

उत्तरदाताओं का फैशन अपनाने के लिए सूचना एवं तकनीकि के साधनों के प्रयोग को जानने का प्रयास करने पर यह ज्ञात हुआ कि 56 प्रतिशत युवा लड़कियाँ कम्प्यूटर का, 34 प्रतिशत टेलीविजन, 10 प्रतिशत मासिक पत्रिका का प्रयोग करती हैं क्योंकि उनका मानना है कि सूचना एवं तकनीकि के साधन का प्रयोग करके नयी सूचनाएं एवं नवीन फैशन से सम्बन्धित जानकारी प्राप्त होती है।

वर्तमान समय में हर लड़की आत्मनिर्भर, स्वावलम्बी होना चाहती है। सूचना एवं तकनीकि के क्षेत्र में लड़कियों ने स्वयं को पूरी तरह से अलग सांचे में ढाल लिया है अर्थात वे फैशन को अपने जीवन का महत्वपूर्ण हिस्सा मानती हैं, फैशन उन्हें जीवन जीने का सही ढंग सिखलाता है। फैशन को अपनाने से उनके विशेषकर मान सम्मान में वृद्धि हुई है तथा फैशन के कारण अपनी नयी पहचान बना सकने में सफल हुई है।

सुझाव

कोई भी कार्य यदि स्वस्थ रूप में अपनाया जाए तभी सफलता प्राप्त होती है, युवा लड़कियों का यह मानना है कि फैशन उनके व्यक्तित्व को विकसित करने में व समाज में सम्मानीय स्थान प्रदान करने में सहायक है लेकिन यदि फैशन को स्वस्थ रूप में न अपनाया जाये तो इसका विपरीत प्रभाव पड़ेगा, संस्कृति व मूल्यों का ह्रास होगा। इसलिए यदि फैशन को स्वस्थ एवं सकारात्मक रूप में अपनाते हैं तो निःसंदेह यह व्यक्तित्व को विकसित करने में एवं समाज में प्रगति लाने में सहायक कारक होगा।

संदर्भ

1. 'प्रगति के पथ पर' सूचना एवं जनसम्पर्क विभाग, बरेली द्वारा प्रकाशित, 2002.
2. Goode. W.J. and Hutt. P.K., "Methods in Social Research" McGraw - Hill New York 1952.
3. Bogardus. E.S. "Sociology" The Macmillan Co. 1964.
4. Rastogi Sangeeta, "Abhinav Fashion Designing" Adhunik Publication Delhi 1997.
5. सिंह डा0 आर0एन0 ''आधुनिक सामाजिक मनोविज्ञान'' विनोद पुस्तक मंदिर आगरा, 2000.
6. शेखर शशि, ''हिन्दुस्तान'' दैनिक समाचार पत्र बरेली में प्रकाशित।
7. Claire. Marie. Jahoda and Deutch. Merton. Cook, "Research Methods in Social Relations" Holt, Rineharl and Winston Inc. 1964.
8. Gopal. M.H. , "An Introduction to Research Procedure in Social Sciences."
9. Young. P.V., Scientific Social Surveys and Research, Prentrie Hall New York, 1960.